तर्ज--धीरे धीरे मेरे सरकार

धीरे धीरे मेरे श्री राज चले आते हैं
अर्श की रूहों के भरतार चले आते हैं

1--माया की चाह ने सब अर्श के सुख छीन लिए
नजर फिरते ही सितम माया ने हम पर है किये
लाड फिर अर्श का देने वो चले आते है

2--धाम के दूल्हा ने माया का ये तन धार लिया
अर्श की खिलवत का खोल के इजहार किया
सुराही इश्क की ले जाम वो पिलाते हैं

3--इश्क की लज्जत का जब आप बंया करते है
रुह तरसे है मेरी जामे इश्क पीने को
संजमे संजमे अपनी नजरो से वो पिलाते हैं

Nijanand App